सरस्वती वन्दना

डा. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा

प्रश्न: निराला रचित "सरस्वती वंदना" कविता का भाव-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर! निराला बहुमुखी प्रतिभा के कवि थे। उनकी बहुमुखी प्रतिभा की कीर्ति सबसे पहले छन्द के क्षेत्र में फूटी। उन्होंने मुक्त-छंद का प्रयोग करके कविता को बंधनों से मुक्त किया। निराला के काव्य विषय व्यापक और वैविध्यपूर्ण हैं। उन्होंने विविध विषयों पर कविताएँ लिखी हैं। पर ध्येय सदा वंचितों, दलितों और सताए लोगों को न्याय दिलाना था। उनकी ओजपूर्ण कविताओं में 'राम की शक्तिपूजा' तथा "महाराज शिवाजी को पत्र" उल्लेखनीय है।

प्रस्तुत कविता 'सरस्वती वंदना' भारतीयों में नए भाव भरने की प्रेरणा लेकर आयी है। कवि भारतवासियों के मन में स्वतंत्रता के नए भाव जगाना चाहते हैं। इसलिए वह विद्या की देवी माँ सरस्वती से प्रार्थना करते हैं। वे भारतीयों को प्राचीन परंपराओं एवं रूढ़ियों से मुक्त हो ज्ञान-ध्यान तथा नए रूप में देखना चाहते हैं। वे माता सरस्वती से इस पापपूर्ण जगत में एक नयी शक्ति एक नयी प्रेरणा का वरदान चाहते हैं। कवि माँ सरस्वती से यह प्रार्थना करते हैं कि इस युग में नव गति का संचार हो, माता सरस्वती इस संसार का नवनिर्माण करें जहाँ दुख एवं कातरता न हो, जड़ता, ताप एवं अज्ञानता हो, उसका नाश हो।

वे कहते हैं — हे वीणावादिनी! आज हमारा देश पराधीन है, यह पराधीनता के स्वामी बंधन में बंधा हुआ है। देशवासियों के हृदय में दासता की एक नहीं, अनेक परतें जमी हुई हैं। उनसे मुक्त कराकर अपने पवित्र ऐक्य और ज्ञान के प्रकाश से इस धरती को भर दें ताकि अज्ञानता और पाप का सदा-सदा के लिए नाश हो जाए। देश में शिथिलता और जड़ता का वातावरण है, उसमें एक नवीन ताल और और नवीन छंद की जरूरत है, हे, माँ, तुम उस गति में नवीनता प्रदान करो।

P.T.O

(2)

तुम्हारी दया से यह सारा देश स्वतंत्रता के लिए उठ खड़ा हो, ऐसा नवीन राग सुनाओ, जो भारतीय युवकों के हृदय में ऐसा राग भर दे और मेघ की गंभीर वाणी के समान चारों दिशाओं में फैला दे; जिससे वे इस राग को नवीन आकाश में, नवीन पंखो और नवीन स्वर वाले पक्षियों की तरह गा उठें।

इस तरह, यह कविता हमें जागरण का संदेश देती है। नवीनता के आग्रही होने के कारण निराला समस्त वातावरण को एक नवीन रूप में देखना चाहते हैं। निराला भारत और भारतीयता के नव निर्माण के पुजारी रहे हैं। अतः वह प्राचीन परंपराओं एवं रूढ़ियों को मिटाना चाहते हैं। जिनके हृदय में मलिनता, ईर्ष्या, द्वेष और अज्ञानता है, उन्हें मिटाना चाहते हैं। भारतीयों को नव गति, ताल, छंद और नए भावों से भरना चाहते हैं जिससे वे स्वतंत्रता के नवीन गीत गा सकें। उनके कंठ में मेघों की ध्वनि तथा वह आकाश जिसमें शब्द का प्रकटीकरण होता है - सभी नए रूप में अवतरित हो जाएँ। आकाश में उड़कर चहचहाने वाले इन पक्षियों के पंख भी नवीन हो जाएँ और उनके स्वरों में नवीनता हो। कवि का कहना है कि नवीन भावों के लिए साधन भी नवीन होना चाहिए क्योंकि प्राचीन भावों से नवीन भावों के पूर्ण गीत नहीं गाए जा सकते। इसलिए कवि सरस्वती माँ से वरदान माँगते हैं कि हमें नवीन गीत, नवीन लय और ताल-छंद का वरदान दो, तुम्हारी कृपा से देश स्वतंत्रता के नवीन राग से गूँजित हो जाएगा।

B. A. Part. I
Hindi Rachna
(Sarswati Vandna)